

# मोरंगे

मई-जून, 2026



# अनुक्रम

## गीत कविताएँ

- कोहरा
- जोकर
- मेरा डाँगी
- काले-काले बदरा
- मोटर साईकिल
- रंगों का ताज

## याद की धूप छाँव में

- अगली बार जीतेगे
- नानी का गाँव
- राजा



## कहानियाँ

- रानी की अंगूठी
- नकटा सियार
- चंचल चिड़िया
- हिरण का दोस्त

## बात लै चीत लै

- घड़े वाली बुढ़िया

विकास बंजारा, कक्षा-5, नवरंग शिक्षण केन्द्र बहरावण्डाकलां

सम्पादन : राजेश कुमावत

डिज़ाइन : लोकेश राठौर

वितरण : अंकुश शर्मा

आवरण चित्र : अनन्या, कक्षा-10, उमंग  
शिक्षण केन्द्र शेरपुर

वर्ष 17 अंक 191-192

प्रबंधन

विष्णु गोपाल

निदेशक

ग्रामीण शिक्षा केन्द्र समिति

पत्रिका का पता

मोरंगे

ग्रामीण शिक्षा केन्द्र

एच-1, फर्स्ट फ्लोर, राजनगर कॉलोनी,

मानटाऊन, सवाई माधोपुर, राजस्थान

322001



‘मोरंगे’ का प्रकाशन ‘यात्रा फाउण्डेशन’  
आस्ट्रेलिया, के वित्तीय सहयोग से हो  
रहा है।

# गीत कविताएँ

## कोहरा

हुआ सवेरा छाया कोहरा,  
नाचने लगा था मोर।  
चारों और घना अंधेरा,  
दिखे ना कोई चोर।  
ठंडी-ठंडी हवा चले,  
कहीं नहीं था शोर।

केशव गुर्जर, कक्षा-8, उदय सामुदायिक पाठशा गिरिराजपुरा।



सालिया बानो, कक्षा-8, उमंग  
शिक्षण केन्द्र मखौली

## जोकर

एक जोकर गठरी भूला  
वापस आया लेने को।  
गठरी में थी चाट पापड़ी  
चाट पापड़ी खा के जोकर,  
पीने लगा दही, पूरा डेढ़ किलो था,  
गया फिर मेले में  
इधर गिरा, उधर गिरा,  
चारों और लुढ़कता फिरा  
ऐसे की मेले की सैर  
वहीं सो गया फेर।

सोजन गुर्जर, कक्षा-6, उदय सामुदायिक पाठशाला गिरिराजपुरा।



रसाल बैरवा, कक्षा-5, उदय किरण शिक्षण केन्द्र बाढ़पुर

## मेरा डॉगी

मेरा डॉगी सटर-बटर  
चले तू मटक-मटक ।  
कमर हिलावे झटक-झटक,  
पर दुखावे जटक-जटक ।  
छाछ पीवे तू गटक-गटक,  
रोटी खावे तू पटक-पटक ।  
पूँछ हिलावे लटक-लटक,  
खावे तू झपट-रूपट ।  
नाचे तू चटक-मटक,  
बात करे तू पटर-पटर ।  
आँख मटकावे टबर-टबर ।  
मोहित बैरवा, कक्षा-5,  
उदय सामुदायिक पाठशाला कटार-फरिया ।

## काले-काले बदरा

काले-काले बदरा छाए,  
अपने को घनघोर बनाये  
टप-टप बूंदे टपकाए  
रिमझिम रिमझिम वर्षा लाए  
भर गए ताल तलैया सारे  
नहाने का मन ललचाए  
पीहूँ-पीहूँ पपैया गाए  
काले काले बदरा छाए ।

रामभजन योगी, शिक्षक, उदय सामुदायिक पाठशाला गिरिराजपुरा ।



श्रीनिका बैरवा, कक्षा-7, उदय किरण शिक्षण केन्द्र सांवलपुर

## मोटर साईकिल

पट—पट करती मोटर साईकिल,

साइलेंसर से धुंआ उड़ाती ।

चली सड़क पर पी—पी करती,

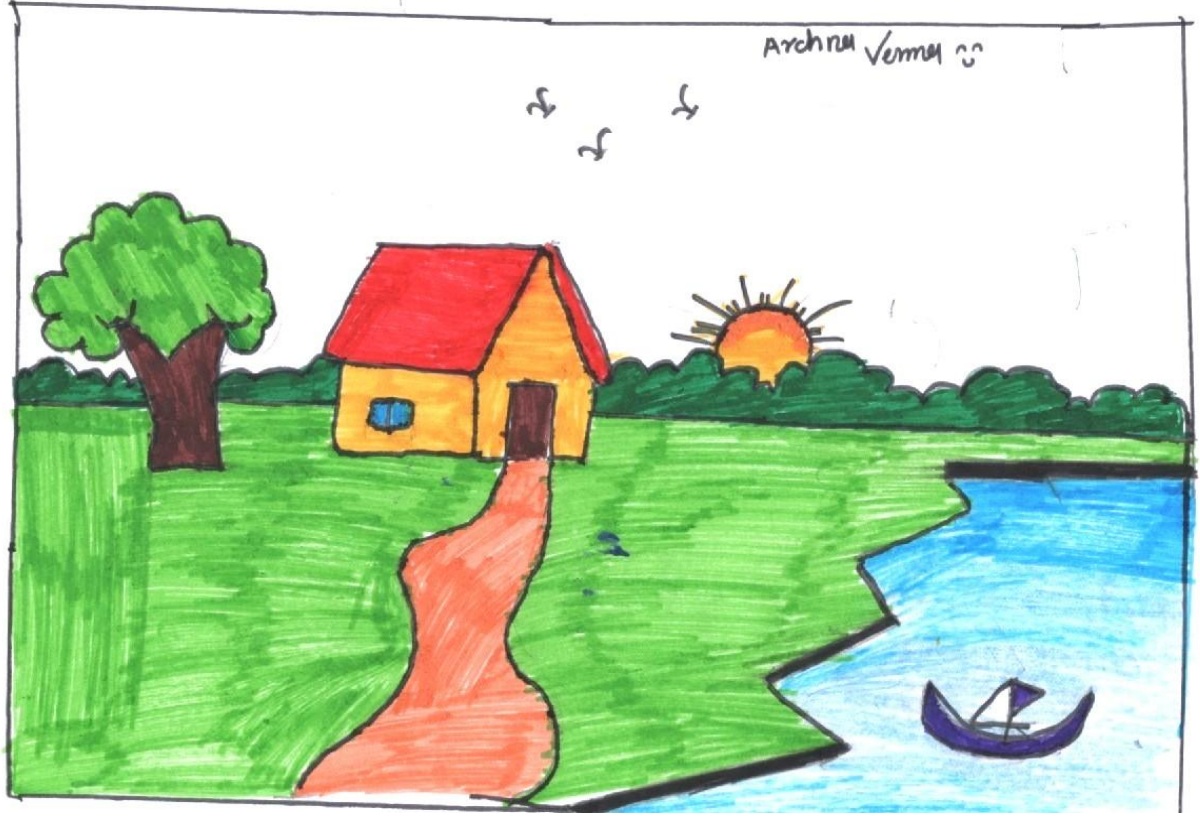
दो पहियों पर खड़ी रहेगी,

कभी—कभी ये पड़ी रहेगी ।

पायल बैरवा, कक्षा-7, उदय सामुदायिक पाठशाला कटार ।



मनीषा बैरवा, ब्लॉक सहायक, उदय किरण कार्यक्रम



अर्चना वर्मा, कक्षा-9, उमंग शिक्षण केन्द्र दौबड़ा

## रंगों का ताज

धूल भरी हवा के संग-संग,  
 मैंने देखी है कई बार  
 नीले अम्बर के आँगन में,  
 नन्हीं बूंदों की फुआर।  
 रंग-बिरंगी फिर सतरंगी,  
 अनुपम रूप सजाती है।  
 सूरज की किरणों की छाया,  
 इन्द्रधनुष बन जाती है।  
 कभी बनती तो कभी बिगड़ती,  
 कुदरत की ये सुंदर छाप।  
 धूल और पानी के मिलने से  
 बन जाता रंगों का ताज।

राजेश कुमावत, शिक्षक, उदय सामुदायिक पाठशाला कटार।

# कहानियाँ

## रानी की अंगूठी

बहुत पहले एक पुराने महल में एक राजा रहा करता था। एक दिन रानी ने राजा से कहा कि, कहीं घूमने चलते हैं। रानी की बात सुनकर राजा बोला कि, हम कल चलेंगे अभी तो तुम सामान एकत्रित करके एक जगह रख लो। दूसरे दिन राजा और रानी घूमने चले गए। जब राजा और रानी एक कुंड में नहा रहे थे, तभी रानी की चांदी की अंगूठी पानी के कुंड में गिर गई और रानी को पता नहीं चला। नहा कर राजा और रानी घर की ओर चल पड़े तभी उस पानी के कुंड में एक भिखारी नहा रहा था। वह चांदी की अंगूठी उसको मिली। उसने सोचा कि यह अंगूठी तो रानी की ही होनी चाहिए। वह भागता हुआ रानी महल में पहुँच गया। वहाँ पर उसे राजा के मंत्रियों ने अंदर नहीं जाने दिया। तभी भिखारी बोला मुझे अंदर जाने दो

अंगूठी रानी

है। तब

उसे अंदर

वह महल

जाकर रानी

दिखाते हुए

क्या यह

आपकी है?

अपनी

पहचान

ने उससे

अंगूठी आपको

सुनकर उसने पूरी

उसकी ईमानदारी देखकर प्रसन्न हुई और उसके बाद रानी ने वह अंगूठी उस भिखारी को ही दे दी।

मोनिका गुर्जर, कक्षा-5, उदय सामुदायिक पाठशाला गिरिराजपुरा।



रिनू महावर, कक्षा-4, उदय सामुदायिक पाठशाला कटार

क्योंकि यह चांदी की  
की हो सकती  
मंत्रियों ने  
जाने दिया।  
के अंदर  
को अंगूठी  
बोला कि  
अंगूठी  
रानी ने तुरंत  
अंगूठी को  
लिया। रानी  
पूछा कि यह  
कहाँ मिली? यह  
घटना सुनाई। रानी

## नकटा सियार

जंगल में एक गुफा थी। उस गुफा में एक आलसी सियार रहता था। वह सियार इतना आलसी था कि कभी-कभी तो वह भोजन करना ही भूल जाता था। उसे पता नहीं रहता कि भोजन भी किया है या नहीं। उसे तो बस अपनी नींद ही प्यारी थी। इसलिए वह दिनभर अपनी गुफा में सोता रहता था। जब शाम होने को आती तो वह उठ जाता। फिर अपनी गुफा से बाहर निकल कर वह जोर से चिल्लाता। वह इतनी जोर से चिल्लाता था कि पूरे जंगल में सिर्फ उसकी ही आवाज गूंजती रहती थी। उसकी यह भयानक आवाज सुनकर जंगल के सारे जानवर बहुत ही ज्यादा डर जाते थे। यह सियार का रोज का काम था। अब इस आवाज से सभी परेशान हो चुके थे। वो सो नहीं पा रहे थे। पर वे जानवर करते भी तो क्या करते? शाम भी बहुत ज्यादा हो चुकी थी। उन्होंने सोचा कि कल सुबह सियार के पास जाकर इस भयानक आवाज के बारे में उससे बात करेंगे। पता करेंगे कि वह इतनी भयानक आवाज क्यों निकालता है? और जंगल के सारे जानवरों को क्यों डराता है? ऐसा सोचकर जंगल के सारे जानवर सो जाते हैं। पर अभी भी लगातार सियार की वह भयानक आवाज उन सभी जानवरों को सोने नहीं दे रही थी। उन्होंने किसी तरह रात तो निकाल ली। सुबह होते ही वे जंगल के सारे जानवर उस सियार की गुफा में पहुँचे, वहाँ उन्होंने देखा कि सियार तो अपनी गुफा में बड़े आराम से सो रहा है। जंगल के सारे जानवरों ने आपस में बातें करी कि यह तो अपनी गुफा में बड़े आराम से सो रहा है और सारी रात हमें अपनी भयानक आवाज निकाल कर बहुत ज्यादा डराता है।

इसे नींद से जगाओ। उन्होंने सियार को नींद से जगाया। सियार ने उन सभी जानवरों को अपनी गुफा में देखकर, सभी जानवरों से पूछा कि क्या बात है जो तुम इतनी सुबह-सुबह मेरी गुफा में आए हो। पहले तो कभी नहीं आए। कुछ तो बोलो, आखिर हुआ क्या? तब जाकर उन सभी जानवरों में से एक जानवर बोला, कि सारे दिन भर तो हम सभी जानवर अपना-अपना काम करते रहते हैं। जब तो तुम बड़े आराम से गुफा में सोते रहते हो। जैसे ही शाम को हम सभी थके हारे काम से घर लौटते हैं। तब हमें आराम से सोने की जरूरत होती है ताकि दूसरे दिन हम पूरी ऊर्जा के साथ काम कर सकें। लेकिन जैसे ही हम सोने लगते हैं तुम्हारी भयानक आवाज आना शुरू हो जाती है जिससे घर के छोटे बच्चे, बुजुर्ग और हम सभी डर जाते हैं। पूरी रात सो नहीं पाते हैं। अब से तुम ये रात में सोते समय

भयानक आवाज निकालना बंद कर दो। यह सुनकर सियार बोला कि आप सभी मुझे माफ कर दो, मुझे पता नहीं था कि मेरी वजह से आप सभी को इतनी परेशानी हो रही है। आगे से मैं इस बात का विशेष ध्यान रखूंगा। यह सुनकर सभी जानवरों ने सियार को माफ कर दिया। सभी जानवर खुशी-खुशी अपने घर की ओर निकल गए। सभी जानवर अभी थोड़ी ही दूर पहुँचे थे और सियार की वही डरावनी आवाजें आना शुरू हो गई थी। सभी जानवरों ने सोचा कि यह सियार तो बहुत ही नकटा है। यह अपनी हरकतों से बाज नहीं आने वाला है। सारे जानवर वापस सियार की गुफा में जाते हैं और सियार की थोड़ी पिटाई लगाते हुए जंगल के दूसरे कोने पर एक गुफा थी वहाँ उसे छोड़ आते हैं। सभी जानवर बोले कि अब तुम्हारा नया घर यही है। क्योंकि तुम्हारे साथ रहने के काबिल नहीं हो। अब तुम यहाँ से जब

जोर से चिल्ला

कि ये तो मेरे

ज्यादा

मैं यहाँ

नहीं

और

को

ने

दिया।

रहकर

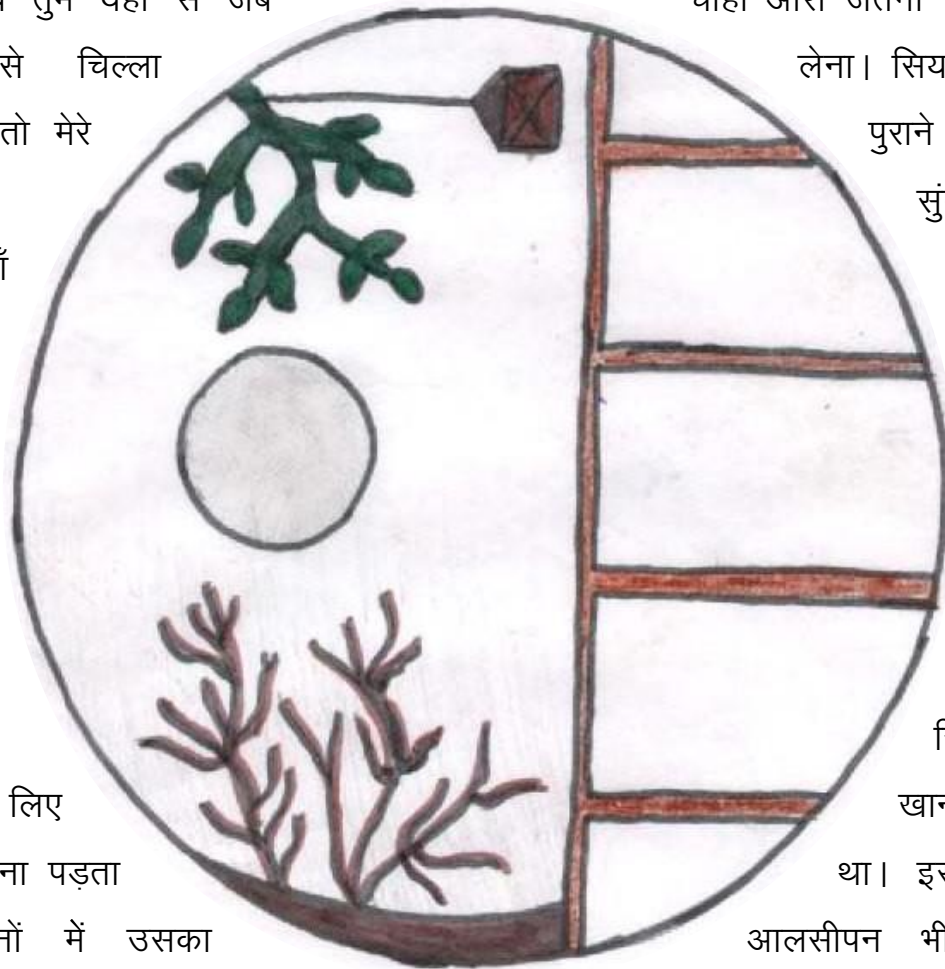
अपने लिए

ही जुटाना पड़ता

ही दिनों में उसका

गया।

लक्ष्मी बैरवा, कक्षा-12, उमंग सेंटर श्यामपुरा।



चाहो और जितना चाहो उतनी

लेना। सियार ने देखा

पुराने घर से भी

सुंदर है। अब

से कहीं

जाऊंगा

सभी

जानवरों

सियार

धन्यवाद

यहाँ

सियार को

खाना भी खुद

था। इसलिए कुछ

आलसीपन भी दूर हो

चित्र-पवन बंजारा, उम्र-12 वर्ष,

नवरंग शिक्षण केन्द्र बहरावण्डाकलां

## चंचल चिड़िया

एक घने जंगल में चंचल नाम की एक चिड़िया रहती थी। वह बचपन से ही सभी जानवरों से मिलनसार और हंसमुख थी। सभी जानवरों ने ही उसका नाम चंचल रख दिया था। चंचल बहुत ही बुद्धिमान चिड़िया थी। चंचल ने अपना घोंसला एक ऊँचे पेड़ पर बना रखा था। जहाँ उसके अण्डे सुरक्षित रहते थे। चंचल अपने अंडों की देखभाल अच्छे से करती थी। एक दिन चंचल खाने की तलाश में चली गई। तभी उस पेड़ के नीचे एक शिकारी आता है और उन अंडों को देखता है। शिकारी अण्डों को अपने घर ले जाने की सोचता है। तभी दूर से चंचल की नजर उस शिकारी पर पड़ती है। वह तुरन्त वहाँ उड़कर आती है। चंचल वहाँ आकर चिल्लाने लगी। तभी जंगल के सारे जानवर-पक्षी वहाँ आ गये। शिकारी उनको देखकर डर गया और वहाँ से भाग गया। चंचल चिड़िया के अण्डे बच गये। चंचल ने सभी जानवरों को धन्यवाद दिया।

बिट्टू नायक, कक्षा-5, उदय किरण फैलोशिप सेंटर हिम्मतपुरा



निशु बैरवा, कक्षा-4, उदय सामुदायिक पाठशाला कटार

## हिरण का दोस्त

एक घना जंगल था। उस जंगल में बहुत सारे जानवर रहते थे। वे जानवर जिस नदी में पानी पीते थे वहाँ एक शेर भी रहता था। एक दिन उस नदी में एक हिरण पानी पीने गया। उस हिरण को पता नहीं था कि इस जगह पर शेर भी रहता है। जब हिरण पानी पी रहा था तब उसे शेर ने देख लिया। हिरण तुरंत वहाँ से भागने की फिराक में था और शेर भी उस हिरण के पीछे घात लगाकर बैठा था। जैसे ही हिरण भागने लगा तभी वह नदी में फिसल कर गिर गया। शेर ने सोचा ये तो मर गया होगा अब मैं इसे आराम से खा सकूंगा। इतने में थोड़ा इधर-उधर घूम लेता हूँ। थोड़ी देर बाद उस हिरण को एक भालू ने मूर्छित पड़े हुए देखा। भालू को लगा जैसे वह उससे सहायता मांग रहा हो। भालू ने सोचा कि क्यों ना मैं इस हिरण को बाहर निकाल दूँ। तुरंत भालू ने हिरण को पानी से बाहर निकाल दिया। हिरण ने भालू कहा कि तुरंत यहाँ से भागो यहाँ शेर है। यह सुनकर दोनों भागकर सुरक्षित जगह पर पहुँच गये। हिरण ने भालू को धन्यवाद दिया और पास ही एक पेड़ पर लगा मधुमक्खी का शहद भरा छत्ता बताया। भालू ने बड़े ही चाव से उसे खाया। भालू और हिरण दोनों दोस्त बन गए और दोनों दोस्त जंगल में खुशी-खुशी रहने लगे।

आरूषी गुर्जर, कक्षा-6, उदय सामुदायिक पाठशाला गिरिराजपुरा।



शीला बावरी, फैलो (शिक्षा साथी) नवरंग कार्यक्रम

# याद की धूप छाँव में

## अगली बार जीतेंगे

मेरा नाम मनीषा है। मैं उदय सामुदायिक पाठशाला गिरिराजपुरा में पढ़ती हूँ। दिनांक 12.11.2022 को हमारा माताजी के थांवला में टूर्नामेंट था। हमें हमारी मेहनत पर पूरा विश्वास था। हमने खूब मेहनत की। हम स्कूल से 5 बजे निकले। हम बहुत उत्साहित थे कि कब हम वहाँ पहुँचेंगे और कब हमारा मैच होगा। हम 5 बजे के लगभग वहाँ जा पहुँचे। दूसरे दिन सुबह उद्घाटन हुआ। उसके बाद दूसरे नम्बर पर हमारा मैच था। जैसे ही हम मैदान में उतरे तो हमने देखा कि चारों तरफ बहुत सारी टीम खड़ी हुई थी। मैदान में उतरते समय हमें घबराहट सी होने लगी। हमने खूब मेहनत की परन्तु हमारी मेहनत रंग नहीं लाई और आखिरकार हम दो गोलों से हार गये। मैदान से बाहर निकलते समय हमें कुछ भी अहसास नहीं हुआ। हमने हार नहीं मानी। हमने सोचा कि दो टीमों से एक टीम तो जीतती ही है। अगली बार हम जरूर जीतेंगे और अच्छी तैयारी करेंगे। लेकिन जब हम स्कूल में आये तो हमें अहसास हुआ। हम अपने आपको शर्मिंदगी महसूस कर रहे थे लेकिन अभी भी हमने खेलना बंद नहीं किया।

मनीषा, कक्षा-7, उदय सामुदायिक पाठशाला गिरिराजपुरा।



स्नेहलता, समुदाय कार्यकर्ता, नवरंग कार्यक्रम

## नानी का गाँव

एक बार की बात है। मीनू नाम की एक लड़की थी। वह बहुत खूबसूरत और ईमानदार थी। दसवीं कक्षा में पढ़ रही थी। गर्मियों की छुट्टियों में वह अपने नाना-नानी के यहाँ गाँव गई। वह अपने नाना-नानी को बहुत चाहती थी। उनकी बहुत याद आती थी। जब वह गाँव में दाखिल हुई तो देखा, गाँव की सड़के अब पूरी तरह नष्ट हो चुकी थी और बहुत ज्यादा कीचड़ हो चुका था। उसने देखा उनके नाना-नानी उसका इंतजार कर रहे हैं। उसकी नानी बहुत पुराने उसूलों की थी। वह अपनी चीजों को बहुत ज्यादा संभाल कर रखा करती थी। एक दिन मीनू ने देखा कि उसके नाना-नानी बेलगाड़ी लेकर कहीं जा रहे थे। उसने उनसे कहा नानी जी मुझे भी गाँव में घूमना है। नाना-नानी के साथ वह गाँव में जाने लगी तब वह देख रही थी और नाना-नानी से बोल रही थी कि जब मैं बड़ी होकर गाँव का सुधार करूंगी और इस पर विचार करूंगी। धीरे-धीरे समय निकलता गया और वह एक पुलिस ऑफिसर बनी। सबसे पहले उसने अपने नाना-नानी के गाँव में सरकार से सड़क बनवाने का प्रस्ताव पास करवा लिया था। बहुत दिनों बाद वह अपने नाना-नानी के गाँव के घर गई। वहाँ अब पुराने गड्ढे नहीं थे। अच्छी सड़के बनने के साथ-साथ घरों में नल, बिजली जैसी और भी आधुनिक मूलभूत सुविधायें पहुँच चुकी थी किन्तु आज उसे नाना-नानी के घर जाते हुए बिल्कुल भी मजा नहीं आ रहा था। क्योंकि अब उसके नाना-नानी इस दुनिया में नहीं थे। वह सोचती काश मेरे नाना-नानी आज जिन्दा होते।

सोयम बानो, कक्षा-10, उमंग शिक्षण केन्द्र दौबड़ा

## राजा

बात तब की है जब मैं मर्सी रिहेबिलिटी सेंटर में केयर गिवर के रूप में कार्य करती थी। मेरे पास चाइल्डलाईन की तरफ से एक छोटा बच्चा जिसका नाम राजा था। वह मुझे मिला। राजा की उम्र लगभग 5 वर्ष थी। बच्चे की भाषा थोड़ी अलग थी। उसके शब्दों से वो बिहार की तरफ का प्रतीत होता था। बच्चा अपने माता-पिता का पता और घर का पता बताने में असमर्थ था। लेकिन मैं एक माँ थी। क्योंकि मेरे पास ही सेम उम्र की बेटी है। इस वजह से मुझे उस बच्चे से भावनात्मक जुड़ाव हो गया था। मैं उससे बार-बार बात करती। उसके बोले शब्दों को गूगल पर देखती और अर्थ समझने की कोशिश करती। एक दिन मैं ऑफिस टिफिन में दाल-बाटी लेकर गई थी। मेरी बेटी भी मेरे साथ ही थी। राजा दाल-बाटी देखकर मेरी बेटी के पास आया और उसे लिट्टी-चौखा जैसा कुछ बोलता है। मेरी बेटी ने मुझे बताया। मैंने गूगल पर देखा। मुझे पता लगा कि ये बाटी को लिट्टी बोल रहा है। जो कि उत्तर प्रदेश या बिहार में खाया जाता था। मेरी बेटी से राजा की अच्छी दोस्ती हो गई। वो मेरी बेटी को बताता है कि उसके पापा हाथी चलाते हैं और एक नदी है जिसके पास वो रहता है। मेरी बेटी की मदद से मुझे उसके बारे में और जानकारियाँ मिली। धीरे-धीरे उसके आस-पास के थाने के नम्बर हमने गूगल से सर्च किये। बच्चे को उत्तरप्रदेश और बिहार की नदियों के आस-पास के फोटो दिखाते शायद कुछ फोटो पहचान ले। चाइल्डलाइन टीम भी अपनी कोशिश कर रही थी लेकिन बच्चे की बात समझ न पाने के कारण वो असमर्थ थे।

एक दिन सेंटर के सारे बच्चे खेल रहे थे। खेल-खेल में बच्चे ने अपने एरिया के किसी खेल पिट्टू का नाम लिया। यह राजस्थान में पत्थर से खेला जाता है। उसने समझा कि कपड़े की बॉल बनाकर पत्थर एक-दूसरे पर रखकर खेलते हैं। मतलब जिस खेल को हम सितोलिया बोलते हैं उसे वो पिट्टू बोलता था। धीरे-धीरे उसके शब्दों को समझकर उसको बिहार के फोटोज दिखाकर हम लोग धीरे-धीरे मंजिल की तरफ थे। मेरी बेटी के साथ यूट्यूब पर विडियो देखते वक्त राजा ने एक मंदिर को देखकर बोला कि ये मेरे गांव में है। बस हमारी खोज को एक नया मोड़ मिला। मंदिर था हरिहर नाथ का मंदिर।

इस मंदिर के नाम से हमें  
उस घाट का पता लगा।  
जहां उसके पापा हाथी  
चलाते थे। हमने उस  
घाट के आस-पास के  
थाने पर कॉल किया।  
किसी विशाल नाम के  
गुमशुदा बच्चे की  
जानकारी वहाँ से प्राप्त  
हुई। हमारे द्वारा उनको  
भी बताया कि हमारे पास  
भी एक बालक है।



चित्रांशी, कक्षा-4, उदय किरण शिक्षण केन्द्र, पालीघाट

यह वो बालक है कि नहीं जिसे वो खोज रहे हैं। इसे कंफर्म करने के लिए मैंने बोला कि, मुझे बच्चे की मम्मी से बात करनी है। 2 दिन बाद मेरी बच्चे की मम्मी से बात हुई। उन्होंने बच्चे का घर का नाम राजा बताया। लेकिन हम फिर भी पूरी तरह विश्वास में नहीं थे। ये लोग सच बोल रहे हैं या झूठ। यह जानने के लिए मैंने वाट्सअप पर विडियो कॉल करने के लिए बोला। विडियो कॉल में बच्चे ने अपनी माँ को पहचान लिया। यह मेरे जीवन की वो सफलता है, जिसे मैं गर्व से याद करती हूँ। बच्चे के माता-पिता 3 दिन बाद सवाई माधोपुर आये। उसके माता-पिता और अरविंद सर (संस्था निदेशक) के पैर पकड़कर धन्यवाद कर रहे थे। मुझे बहुत खुशी हो रही थी। मेरे पैर जमीन पर नहीं थे। दिल धक-धक कर रहा था, ये सोचकर कि मैंने एक बच्चे को उसकी माँ से मिलवाया है। राजा जाते वक्त बहुत रोया। इस एक महीने में उस बच्चे में मुझे मेरा बच्चा ही नजर आने लगा था। राजा मेरे गले लगकर बहुत रोया और उसने मुझे बहुत प्यार से पप्पी दी। मेरी बेटी भी उसको गले लगाई। इस तरह राजा को हमने प्यार से विदाई दी। आज भी वो बच्चा मुझे याद करता होगा या नहीं ये मैं सोचती रहती हूँ। लेकिन हमेशा यही दुआ करती हूँ कि वो खुश रहे, सलामत रहे।

स्नेहलता वर्मा, शिक्षिका, नवरंग कार्यक्रम।

# भाषा की सहेलियाँ, बूझो यार पहेलियाँ

1. काड़ी गाय, मीठो दूध ।
2. हरो कंचन, कचनारी को डण्डो, मिश्री को टूक, जलेबी को अण्डो ।
3. जंगल है पर शेर नहीं, पानी है पर मछली नहीं ।
4. धोड़ो-धोड़ो झाबरी पूँछ, तोसू नहीं आवे तो थारा दादा सू जा पूँछ ।
5. हरी बाउंड्री, लाल मकान, उसमें बैठे काले जवाब ।

आरूषि, कक्षा-7, उदय सामुदायिक पाठशाला गिरिराजपुरा ।



कविता योगी, शिक्षिका, उमंग शिक्षण केन्द्र रांवल

## चुटकले

1. दाल, चावल से— तुम मेरे बिना अधूरे हो  
चावल— और तुम मेरे बिना बेस्वाद हो।  
घी ऊपरसे बोला— बस करो यार, मैं नहीं आऊँ तो दोनों की दोस्ती फीकी है।
2. पहली रोटी दूसरी रोटी से— तू क्यों रो रही है?  
दूसरी रोटी— आज तवा बहुत गरम था और बेलन वाले भैया ने तो मुझे गोल गोल घुमाकर चक्कर ही अना दिए।

साक्षी बैरवा, कक्षा-4, उदय सामुदायिक पाठशाला कटार



अल्समा बानो, कक्षा-9, उमंग शिक्षण केन्द्र दौबड़ा

# बात लै चीत लै

## घड़े वाली बुढ़िया

एक गाँव में एक बुढ़िया रहती थी। वो रोज नदी से मटके में पानी भरकर लाती थी। उसके पास दो मटके थे। एक साबूत और तला (थोड़ा टूटा हुआ) साबूत मटके को अपने पर घमंड था।



अंजली सैनी, कक्षा-9, उमंग शिक्षण केन्द्र कुण्डेरा

उसने तले हुए मटके से कहा, “देखो मैं कितना पानी लाता हूँ। तू तो आधे रास्ते में ही गिरा देता है। तू किसी काम का नहीं है।” तला हुआ मटका चुप रहता। दोनों की बातें सुनकर बुढ़िया को भी दुःख होता था। एक दिन बुढ़िया ने तले हुए मटके से कहा, “बेटा तू उदास क्यों है? मटका बोला, “माई मैं तेरे किस काम का? मैं तो आधा पानी रास्ते में ही गिरा देता हूँ।” बुढ़िया हंसी! और बोली, “अरे पागल तूने कभी रास्ते के किनारे देखा है? मटके ने देखा। जिस तरफ से पानी टपकता था, उस तरफ पूरी कतार में फूल खिले थे। रंग-बिरंगे, सुंदर-सुंदर। बुढ़िया बोली, “मैंने जान-बूझकर तुझे रखा। रोज तेरे टपकने पर मैं बीज डाल देती थी। आज पूरा रास्ता फूलों से महकता है। तू टूटा नहीं है, तू तो सबसे खास है।”

समुदाय के लोगों से सुनी हुई बात। पुनर्लेखन— बृजेश बैरवा, शिक्षक, उदय सामुदायिक पाठशाला कटार।

पहिले के जवाब —  
1. मरुमकखी  
2. गन्ना  
3. गारियल  
4. मर्गी  
5. गरबज



रीना सैनी, फैलो, उदय किरण शिक्षण केन्द्र खवा